प्रातःक्लास 25/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। (बापदादा के हाथ में मोतिये(यों) के फूल थे) बाबा सा. कराते हैं ऐसे खुशबुएंदार फूल बनने हैं। बच्चे जानते हैं हम फूल बने थे ज़रूर। गुलाब फूल भी बने थे, मा(मो)तियों के फूल भी बने थे अथवा हीरे भी बन थे। फिर अभी बन रहे हैं। यह है सच्ची। आगे तो थे झूठी। झूठ ही झूठ। सच्च की रत्ती नहीं। अभी तुम सच्चे बनते हो। तो फिर सच्चे में सभी गुण भी चाहिए। जितनी जिसमें गुण हैं उतना औरों को भी दान दे आप समान बना सकते हैं; इसलिए बाप कहते रहते हैं बच्चों को बच्चे पोतामेल रखो अपने गुणों का। देखो हमारे में कौन सी अवगुण है। दैवी गुणों में क्या कमी है। शाम को वा राता को रोज़ अपना पोतामेल निकालो। दुनियां के मनुष्य की तो बात ही अलग है। तुम अभी मनुष्य नहीं हो ना। तुम हो ब्राह्मण। भल मनुष्य तो सभी मनुष्य ही हैं; परंतु हरेक के चलन में, गुणों (में) बहुत फ़र्क पड़ जाता है। माया के राज्य में भी कोई–2 मनुष्य बहुत अच्छे गुणवान होते हैं; परंतु बाप को तो नहीं जानते हैं। बड़े रिलीजियस माईंडेड नर्म दिल होते हैं; क्योंकि दुनियां में तो सभी प्रकार के मनुष्य रहते हैं ना। मनुष्यों की गुणों की वैरायटी है। और जब देवताएं बनते हैं तो दैवीगुण तो सभी में हैं। बाकी पढ़ाई के कारण मर्तबे कम हो पड़ते हैं। एक तो पढ़ना है, दूसरा अवगुणों को निकालना है। यह तो बच्चे जानते हैं हम सारी दुनियां से ही न्यारे हैं। यहां जैसे कि ..... ब्राह्मण कुल बैठा हुआ है। शूद्र कुल और ब्राह्मण कुल में रात–दिन का फ़र्क है। शूद्र कुल में है मनुष्यमत। ब्राह्मण कुल में है ईश्वरीय मत। पहले–2 तुमको बाप का परिचय देना है। तुम बतलाते हो फलाना यह–2 कहते हैं, तुमसे आरग्यु करते हैं। बाबा ने समझाया था लिख दो हम ब्राह्मण अथावा ब्रह्माकुमारी–कुमार हैं ईश्वरीय मत। तो समझ जावेंगे इनसे ऊँचा तो कोई है नहीं। ऊँच ते ऊँच है भगवान। तो हम उनकी मत पर हैं। मनुष्य मत पर हम नहीं चलते हैं। ईश्वरीय मत पर चल हम देवता बनते हैं। मनुष्यमत अभी छोड़ते जाते हैं। बिल्कुल छोड़ ही दी है। फिर तुमसे कोई आरग्यु कर न सके। कोई कहे यह कहां से सुना, किसने सिखलाया है? तुम कहेंगे हम हैं ईश्वरीय मत पर। प्रेरणा की तो बात ही नहीं। ईश्वरीय प्रेरणा और ईश्वरीय मत में रात–दिन का फ़र्क है। प्रेरणा का कोई अर्थ ही नहीं। प्रेरणा अर्थात् विचार। बस हम तो डायरैक्ट ईश्वर के मत पर चलते हैं। बेहद के बाप के, ईश्वर से हम समझे हुये हैं। बोलो, भक्ति मार्ग के शास्त्रमत पर तो हम बहुत समय चले। अभी हमको मिली है ईश्वरीय मत। वह भक्ति मार्ग है ही अलग। यह है ज्ञान मार्ग। तुम बच्चों को तो बाप ही महिमा करनी है। पहले–2 यह बुद्धि में बिठाना है। हम ईश्वरीय मत पर हैं। मनुष्य मत हम नहीं सुनते। ईश्वर ने कहा है हियर नो ईविल मनुष्य मत। सी नो मनुष्य। अपन को आत्मा देखो। शरीर को न देखो। यह तो पतित शरीर है। इनको क्या देखने का है। इन आँखों से यह न देखो। शरीर तो पतित का पतित ही है। शरीर यहां कब सुधरने का नहीं है और ही पुराना होना ही है दिनप्रति–दिन। सुधरती है आत्मा। आत्मा ही अविनाशी है; इसलिए बाप कहते हैं सी नो ईविल शरीर को भी नहीं देखना है। देह सहित देह के जो भी संबंध हैं उनको भूल जाना है। बाकी सिर्फ़ आत्मा को देखो। एक परमात्मा बाप से सुनो इसमें ही मेहनत है। तुम फील भी करते हो यह बड़ी सब्जेक्ट है। जो होशियार होंगे उनको फिर पद भी इतना ऊँच मिलेगा। सेकण्ड में जीवन मुक्ति मिल सकती है; परंतु अगर पूरा पुरुषार्थ न किया तो फिर सज़ा भी बहुत खानी पड़ेगी। तुम बच्चे अंधों की लाठी बनते हो बाप का परिचय देने के लिए। आत्मा को देखा नहीं जाता है। जाना जाता है। आत्मा है कितनी छोटी। इस आकाश तत्व में मनुष्य देखो कितने जगह लेते हैं। मनुष्य तो आते–जाते हैं ना। आत्मा कहां आती–जाती है क्या। आत्माओं की कितनी छोटी जगह होगी। विचार की बात है आत्मा कितनी अति सूक्ष्म है। आत्माओं का झुण्ड कितना छोटा होगा। शरीर में भेंट में आत्मा कितनी छोटी है। कितनी छोटी जगह लेगी। तुमको तो रहने के लिए बहुत जगह चाहिए। सारी आत्माओं को इकट्ठा करो तो भी एक फ्लींग(फर्लांग) भी नहीं होगा। इसमें सभी आत्माएं आ जावेंगी। बुद्धि से काम लिया जाता है। अभी तुम बच्चे विशाल बुद्धि बने

हो। मनुष्य तो कह देते परमात्मा नाम–रूप से न्यारा है। फिर तो आत्मा भी नाम–रूप से न्यारी बाकी क्या है। कुछ भी नहीं। यह सभी बातें विचार की जाती हैं। हमारा रहने का स्थान ब्रह्म महत्मव है, कितना बड़ा है। आकाश तत्व से भी उनको बड़ा कहेंगे। इनका भी अंत नहीं, उनका भी अंत नहीं। समुद्र का भी अंत नहीं ले सकते हैं। बहुत फर्क़ है। वह है हम आत्माओं का घर। यहां हम आते हैं पार्ट बजाने। कितना बड़ा शरीर मिलता है। कितने कर्म–इन्द्रियां हैं क्या–2 करते हैं। यह विचार करते भी बाप याद आते हैं। बाबा सभी बातें समझाते हैं नई दुनियां के लिए और फिर बताने वाला भी नया है। कृष्ण भगवानुवाच है नहीं। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान वह बता न सके। वह तो कुछ भी नहीं जानते। तुम कहेंगे वह राजयोग का अक्षर भी नहीं जानते। तुमको यह कौन समझाते हैं, पहले–2 यह बताना है। मनुष्य तो कोई नहीं जानते हैं। सबसे रहम मांगते रहते हैं। अपन को ताकत नहीं है जो अपन पर रहम कर सके। तुमको ताकत मिली है। तुमने बाप से वर्सा लिया है और कोई को रहमदिल नहीं कहा जाता। मनुष्य को कब देवता नहीं कह सकते हैं। रहमदिल एक ही बाप है। जो मनुष्य को देवता बनाते हैं। बाकी तो सभी हैं काग विष्टा समान रहम करने वाले; इसलिए कहते हैं परमपिता परमात्मा की महिमा अपरमअपार है। उसका पारा–वार नहीं। बाप जो नई दुनियां बनाते हैं उसमें सभी कुछ नया होता है। मनुष्य, पशु, पंक्षी सभी सतोप्रधान होते हैं। बाप ने समझाया है तुम ऊँच बनते हो तो तुम्हारा फर्नीचर भी ऐसा ऊँच होता है। सभी चीज़ ऊँच ते ऊँच होते हैं। ऊँचे ते ऊँचा भगवान गाया हुआ है। वह है बेहद का बाप। ऊँच ते ऊँच बाप से विश्व की बादशाही मिलती है। बाप सिर्फ़ कहते हैं हम तीरी पर बहिस्त ले आया हूँ। वह लोग तरी से कैंसर आदि निकालते हैं। यहां तो पढ़ाई की बात है। सच्ची रियल पढ़ाई। तुम समझते हो हम पढ़ रहे हैं। पाठशाला में आये हैं। यह पाठशालाएं तुम बहुत खोलो तो तुम्हारे एक्टिविटी को देख कोई उल्टी चलन चलते हैं तो नाम बदनाम कर देते हैं। देह अभिमान वाले की एक्टिविटी ही अलग होगी। देखेंगे ऐसी एक्टिविटी है तो फिर सभी कलंक लग जाता है। समझते हैं इनके एक्टिविटी में तो फ़र्क नहीं है। तो गोया बाप की निंदा कराई न। सारा दोष उस पर आ जाता है। गुण बहुत अच्छी चाहिए। तुम्हारा कैरेक्टर्स बदलने में कितना टाइम लगता है। तुम समझते हो कोई–2 के कैरेक्टर्स बहुत अच्छी फर्स्ट क्लास हो जाते हैं। वह दिखाई भी पड़ेंगे। बाबा एक–2 बच्चे को बैठ देखते हैं। इनकी कर्म इन्द्रियां क्या–2 करती हैं। इनमें क्या–2 गुण हैं। क्या–2 अवगुण हैं। गुण और अवगुण दोनों पर ही नज़र जावेंगे। इसमें क्या–2 खामियां हैं। जो निकालनी चाहिए। एक–2 की जांच करते हैं। खामियां तो सभी में हैं। तो बाप सभी को देखते रहते हैं। रिज़ल्ट देखते रहते हैं खामियों ऊपर। बाप का तो बच्चों पर लव रहता है ना। जानते हैं इनमें यह खामी है। इस कारण यह उतना ऊँच पद पा नहीं सकते हैं। अगर खामियां न निकलेंगी तो बड़ा मुश्किल है। देखने से ही मालूम पड़ जाता है। कोई गड़बड़ होगी तो बाबा की सिकल(शक़्ल) फिरते रहेंगे। यह तो जानते हैं अभी टाइम पड़ा है बाकी खामियां निकालने लिए। उम्मीद है सुधर जावेंगे। कितना टाइम लगता है एक–2 की जांच करने। बाप की नज़र एक–2 के गुणों पर पड़ेंगे। पूछेंगे तुम्हारे में कोई अवगुण तो नहीं है। बाबा के आगे तो सच्च बता देते हैं। कोई–2 को देह अभिमान रहता है तो नहीं बताते हैं। बाप तो कहते रहते हैं आपे ही जो करे सो देवता, कहने से करे सो मनुष्य, कहने से भी न करे सो गदहा। बाबा कहते रहते हैं जो भी खामियां हैं इस जन्म के वह बाप के आगे वर्णन करो। आपे ही बतावेंगे। बाबा तो सभी को कह देते हैं। खामियां सर्जन को बतानी चाहिए। शरीर की बीमारी नहीं अंदर की बीमारी बतानी है। तुम्हारे पास अंदर में क्या–2 आसुरी ख़्यालात रहते हैं। तो उस पर बाबा समझावेंगे। इस हालत में तुम इतना ऊँच पद नहीं पा सकेंगे। जब तक अवगुण न निकले। अवगुण बहुत निंदा कराते हैं। मनुष्यों को शक पड़ता है भगवान इनको पढ़ाते हैं। भगवान तो नाम रूप से न्यारा है। सर्वव्यापी है वह कैसे इनको पढ़ावेंगे। इनकी चलन कैसी है। यह तो बाप जानते हैं तुम्हारे गुण कैसे फर्स्ट क्लास होनी चाहिए। अवगुण

छिपा देंगे तो कोई को इतना तीर नहीं लगेगा; इसलिए जितना हो सके अपन में अवगुण जो हो उनको निकालते जाओ। नोट करो हमारे में यह–2 खामी है। तो दिल अंदर में खावेगी। घाटा पड़ता है तो दिल खाती है ना। व्यापारी लोग रोज़ अपना खाता निकालते हैं। आज कितना फायदा हुआ। रोज़ का देखते हैं। यह बाप भी कहते हैं रोज़ अपनी चाल देखो। नहीं तो अपना बहुत नुकसान कर देंगे। बाप के पत गंवाये देंगे। गुरु की निंदा कराने वाला ठौर न पाये। देह अभिमानी ठौर न पावेंगे। देही अभिमानी अच्छे ठौर पावेंगे। देही अभिमानी बनने लिए ही पुरुषार्थ करना है। दिन–प्रतिदिन सुधरते जाते हैं। देह अभिमानी से जो कर्तव्य होते हैं उनको काटते रहना है। देह अभिमान से पाप ज़रूर होता है; इसलिए देही अभिमानी बनते रहो। यह तो समझते हैं जन्म लेते ही कोई बनता। 40/50 वर्ष तुमको लग जाते हैं देही अभिमानी बनने में। टाइम तो लगता है ना। यह भी तुम समझते हो अभी हमको जाना है। दुनियां में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो समझे अभी हमको जाना है। जैसे कि जनावर बुद्धि हैं। बाबा के पास बच्चे आते हैं कोई 6 मास बाद आते हैं कोई तीन मास बाद भी आते हैं। तो बाप देखते हैं इतने समय में क्या उन्नति हुई है। दिन–प्रतिदिन कुछ सुधरते रहते हैं या कुछ दाल में काला है। कोई चलते–2 पढ़ाई छोड़ देते हैं। बाबा कहते हैं यह क्या। भगवान तुमको पढ़ाते हैं भगवान–भगवति बनाने। ऐसी पढ़ाई तुम छोड़ देते हो। तुम तो बहुत ही कमबख़्त हो। वर्ल्ड गॉड फादर पढ़ाते हैं। इसमें एबसेंट। माया कितनी प्रबल है। फर्स्ट क्लास पढ़ाई से तुम्हारा मुख ही मोर(ड़) देती है। बहुत ही चलते रहते हैं। फिर पढ़ाई को लात मार देते हैं। यह तो तुम समझते हो हमारा अभी मुँह है स्वर्ग़ के तरफ। लात है नर्क तरफ। तुम हो संगमयुगी ब्राह्मण। यह पुरानी रावण की दुनियां। उस तरफ लात है। मुँह है स्वर्ग़ तरफ। उनको तो पूरा याद करना चाहिए। हम ..... शान्तिधाम–सुखधाम ज़रूर जावेंगे। बच्चों को यही याद रखना पड़े। टाइम थोड़े ही है। कल शरीर भी छूट जाता है। बाप की याद न होगी तो फिर अंत काल जो सिमरे..... बाप समझाते तो बहुत हैं। बहुत मेहनत करनी है अपने साथ। गुप्त बाप है। नॉलेज भी गुप्त है। यह भी जानते हैं कल्प पहले जितना पुरुषार्थ किया है वही कर रहे हैं ड्रामा अनुसार। बाप भी कल्प पहले मिसल समझाते रहते हैं। इसमें फ़र्क नहीं पड़ सकता। बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाये। सज़ा न खानी चाहिए। बाप के सामने सज़ाएं बैठ खावेंगे तो बाप क्या कहेंगे। तुमने सा. भी किये हैं। उस समय सिर ऊपर नहीं कर सकते बाप के सामने। इन द्वारा बाप पढ़ाते हैं तो इनका ही सा. होगा। इन द्वारा ही हमको समझाते रहते हैं। तुमने यह–यह किया है। फिर उस समय बहुत रोवेंगे, चिल्लायेंगे। अफसोस भी करेंगे। बिगर सा. सज़ा मिल न सके। कहेंगे तुमको इतना पढ़ाते थे फिर भी तुम ऐसे काम किया। जैसे बाबा ने मिसाल बताया बच्चों की मत पर बच्चियों को काम चिक्षा पर बिठाये कत्लाम कर दिया। तो कितना पाप हुआ। ऐसा पाप तो इस समय तक कोई ने नहीं किया है। सज़ा भी बहुत कड़ी है। बाप के साथ योग लग न सके। तुम भी समझते हो रावण के मत पर हमने कितने पाप किये हैं। पूज्य से पुजारी बन पड़े, बाप को सर्वव्यापी कहते आये। यह तो पहले नम्बर की इनसल्ट है। इसका हिसाब–किताब भी बहुत है। बाप डोरापा देते हैं तुमने अपन को कैसे चमाट मारी है। हिन्दू तो कोई धर्म है नहीं। कितने बेसमझ बन पड़े हैं। भातरवासी ही कितना गिरे हैं। बाप आकर समझाते हैं। अभी तुमको कितनी समझ मिली है। सो भी नम्बरवार ही समझते हैं। ड्रामा अनुसार आगे भी ऐसे ही इस समय तक क्लास की यह रिज़ल्ट थी। बाप बतावेंगे तो सही ना। तो बच्चे अपनी उन्नति करे रहे देह अभिमान छोड़ते रहो। माया ऐसी है जो देही अभिमानी रहने नहीं देती है। यह ही बड़ी सब्जेक्ट है। अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। कितनी फर्स्ट क्लास सीधी बात है। मनुष्य से देवता बनना बहुत बड़ा इम्तहान है। इसमें कोई भी किताब, शास्त्र आदि की बात ही नहीं। यह बाप आकर पढ़ाते हैं। तुमसे आरग्यु करते हैं, पूछना

चाहिए ना तुम किसके मत पर बात करते हो? मनुष्य मत पर, शास्त्र पर। ईश्वरीयमत पर तो कह न सके; क्योंकि मत तो सम्मुख मिलती है। प्रेरणा आदि की बात ही नहीं। ऐसे भी कहते हैं भगवान ने प्रेरणा की। भगवान हमारे अंदर को जानते हैं। बाबा के आगे भी कहते आप तो सभी कुछ जानते हो। बाबा कहते हैं मैं तो तुमसे पूछता हूँ। जानता होता तो पूछने की दरकार ही नहीं। यह तो हम जानते हैं तुम जंगली, उल्लू, पाजी बन पड़े हो। इसमें सभी आ जाते हैं। यह जानत हूँ। बाकी क्या होगा जो पूछूँ। बच्चे समझते हैं बाबा ठीक ही कहते हैं। हम पहले बन्दर से भी बदतर थे। कहां वैश्यालय, कहां यह शिवालय। कहां वह मनुष्य पढ़ाते, कहां यह सभी आत्माओं का बाप पढ़ाते हैं। तुम कितने मेहनत करते हो। भगवान पढ़ाते हैं यह निश्चय हो जाये तो हम भी उससे ही पढ़ेंगे; परंतु ड्रामा अनुसार किसकी बुद्धि में बैठता नहीं है। इतनी प्रदर्शनी की। क्या तुम समझते हो सचमुच किसको निश्चय हुआ? एक को भी नहीं। भगवान पढ़ाते हैं यह किसको भी निश्चय नहीं हुआ। अच्छा किसको निश्चय भी हो। फिर बाप का नाम बाला कर दिखावे। मेहनत है ना। तुम्हारे भल सर्विस करते हैं; परंतु दैवी गुण कहां हैं। निश्चय बुद्धि वालों की एक्टिविटी तुम बच्चों को बतलाते रहेंगे। इसको कहा जाता है निश्चय। वह बाप को बहुत ही लव करेंगे। जानते हैं बाबा हमारे तकदीर को बहुत ही ऊँच बनाते हैं। बाप का बच्चा बन फिर कब रोना भी न है। रो लिया तो कौन कहेंगे इनको निश्चय है। राजा का बच्चा भी रो लेवे। तुम तो ईश्वर के बच्चे हो ना। देवताएं कब रोते ही नहीं। यह सभी सीखना तो यहां है। अभी तुम जानते हो भारत ऐसा था। कब अकाले मृत्यु नहीं होती थी। नाम ही है अमरपुरी। बाप काल पर जीत पहनाते हैं। वहां काल का डर नहीं। यहां तो डर रहता है ना। तुम्हारी जब वह अवस्था हो जावेगी तो फिर खुशी से शरीर छोड़ देंगे। बस अभी तो हम जाते हैं। यह अवस्था पिछाड़ी की होगी। भां होती है। ऐसे बैठे–2 शरीर को छोड़ देंगे। सोये हुये भी नहीं। सेकण्ड ग्रेड वाले सन्यासी भी ऐसे बैठे–2 शरीर छोड़ देते हैं। फिर भी पुनर्जन्म में तो आते हैं। उनके शिष्य लोग समझते हैं ज्योति ज्योत में समाया । लीन हो गया। बाबा का देखा हुआ है ऐसे बैठे–2 शरीर छोड़ देते हैं। बड़ा ही शांत का वायुमण्डल हो जाता है। हम भी बाबा के पास जावेंगे ऐसे ही बैठे–2। पास विद ऑनर तब कहा जाता। नूँध ही ऐसी है। बड़ा खुशी से जैसे सजनी–साजन पास खुशी से जाती है। आत्माओं का बाप भी साजन है ना । तो ऐसे बैठे–2 जाना चाहिए। मोस्टविलबेट माशुक है। ऐसे जब शरीर छोड़ेंगे तो प्राइज़ मिलेगा। तुम समझते हो बरोबर बाबा ठीक कहते हैं। जाना है तो ऐसे। अपनी अवस्था की जांच करनी है। कोई स्त्रियां पति के पिछाड़ी चिक्षा पर चढ़ती है। कितनी निडर होती हैं। कोई उनको रोक न सके। फिर उस पति के साथ मिलती है। मनोकामना पूरी होती है। एक जन्म के लिए। आगे सती स्त्री का बहुत गायन था। पति में मोह बहुत रहता था। फिर भी विकारी दुनियां में ही मिलते हैं सतयुग में तो ऐसी बातें होती ही नहीं। तो बाप के पास जाने लिए भी ऐसी निर्भय अवस्था चाहिए। पतियों के पति पास भी ऐसे ही जानी चाहिए। सतयुग में तो विधवा आदि ऐसे छी–2 अक्षर होते ही नहीं। वह अवस्था जमाने लिए अभी टाइम पड़ा है। जब लड़ाई का भी टाइम फाईनल आ जाता है तब वह अवस्था कमप्लीट जम जाती है। जानते तो हो कलियुग से फिर सतयुग कैसे आना चाहिए। बाकी सभी अपने घर चले जाते हैं। आत्मा कहती है हम जाते हैं अपने स्वीटहोम, खुशी से। पुरुषार्थ करने से क्या नहीं हो सकता। वह तो पिछाड़ी के समय ऐसी प्रेरणा आती है। हमको अभी जाना है। वह ड्रामा में नूँध है। जाने लिए तख़्त पर बैठ जावेंगे। वहां मालूम पड़ता है वहां हम शरीर छोड़कर जाकर बच्चा बनेंगे। वैसे यह भी मालूम पड़ेगा। कहां भी होंगे ऐसे ही बैठकर जावेंगे। रात चलते थोड़े ही शरीर छोड़ देंगे। बड़ी मीठी अवस्था चाहिए। दिन–प्रतिदिन तुम बच्चों को बहुत ही खुशी होती रहेगी। तब गाया जाता है मिरुवा मौत मलूका शिकार। शंकराचार्य सच्च कहते हैं ब्रह्माकुमारियां हिन्दूधर्म का नाश चाहती हैं; परंतु कैसे विनाश चाहती हैं फिर क्या होगा। यह थोड़े ही समझा सकते हैं। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग।